# अनियोजित विकास ही दिल्ली की अहम समस्या

यूं तो दिल्ली में नाना तरह की समस्याएं हैं, लेकिन सबसे बड़ी समस्या यातायात जाम, पार्किंग और प्रदूषण की है। इतिहास गवाह है कि उस शहर या कस्बे को विशेष दर्जा प्राप्त रहता था जो नदियों के किनारे बसे होते थे। दिल्ली को यमुना नदी ईश्वर के वरदान के रूप में मिली है, लेकिन क्या इसके गंदे जल को देखकर कोई कह सकता है कि यह वही नदी है जिसे वेद-पुराणों में पवित्र और पूजनीय कहा गया है। आखिर इन समस्याओं का क्या हल है? और, जो योजनाएं बनाई गईं, उन पर सरकार ने अमल क्यों नहीं किया? इन्हीं समस्याओं पर अपने विचार रख रहे हैं आरजी गुप्ता। दिल्ली के विकास में गहरी रुचि को देख मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने श्री गुप्ता को सरकार में विकास मामलों के परामर्शदाता के रूप में शामिल किया था। वे दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) में अतिरिक्त आयुक्त (योजना) के पद पर भी रह चुके हैं। इसके अलावा चंडीगढ़ को सुनियोजित तरीके से बसाने में भी सहयोग दे चुके हैं। दिल्ली को सजाने-संवारने की कई योजनाएं उनके समय में बनीं, लेकिन उन पर आज तक अमल नहीं हो पाया। इन्हीं बिंदुओं पर श्री गुप्ता से **विष्णुदत्त शर्मा** ने बातचीत की-

**आपकी नजर में राजधानी की सबसे बड़ी समस्या क्या है?**

दरअसल दिल्ली का अनियोजित तरीके से बसना ही सबसे बड़ी समस्या है। यहां का केवल 30 प्रतिशत हिस्सा ही नियोजित तरीके से बसा है। शेष 70 प्रतिशत क्षेत्र अनियोजित है। इस हिस्से में अवैध कॉलोनियां, झुग्गी बस्तियां और गांव आते हैं। इस इलाके में सुनियोजित और समुचित विकास करना अब संभव नहीं है। इसके अलावा यह भी संभव नहीं है कि पूरे इलाके को ध्वस्त कर दुबारा नियोजित तरीके से बसाया जाए। होना तो यह चाहिए था कि जब दिल्ली में 70 और 80 के दशक में अवैध बस्तियां बसने का सिलसिला जोरों से चल रहा था, उस समय सरकार या डीडीए को या तो इन कॉलोनियों को बसने से रोकना चाहिए था या फिर इन्हें नियोजित तरीके से बसाया जाना चाहिए था। यदि ऐसा होता तो आज राजधानी की तस्वीर इतनी बदसूरत नहीं होती।

आरजी गुप्ता

**यमुना के विकास के लिए योजनाएं तो बनीं, लेकिन उन पर अब तक अमल नहीं हो पाया? आखिर क्यों?**

यमुना को साफ-सुथरा रखने और उसके तटों को सुंदर बनाने के लिए वर्ष 1980 में योजना बनी थी। उसके क्रियान्वयन के लिए पुणे से पर्यावरण विशेषज्ञों को बुलाया भी गया था। इस पर उस समय करीब पचास लाख रुपये डीडीए ने खर्च किए थे। इन विशेषज्ञों की राय पर प्राधिकरण ने करीब 2800 करोड़ रुपये की योजना बनाई, लेकिन दुर्भाग्य से उस योजना पर अब तक अमल नहीं हो पाया है।

**क्या थी वह योजना?**

देखिए दिल्ली में यमुना करीब पचास किलोमीटर लंबाई में बहती है। यमुना के दोनों तटों को जोड़ दिया जाए तो यमुना का दिल्ली में क्षेत्रफल करीब 79 वर्ग किलोमीटर है। लेकिन आम दिनों में यमुना का जल केवल 20 प्रतिशत हिस्से में ही बहता है। शेष 80 प्रतिशत हिस्सा सूखा ही रहता है। इस क्षेत्र को हराभरा बनाकर इसे पिकनिक स्थल बनाया जाना था। यमुना में जो गंदे नाले गिर रहे हैं उनके लिए नदी के तटों पर अलग से नाले बनाए जाने थे। इन नालों के पानी को निजामुद्दीन के पास ट्रीटमेंट प्लांट लगाकर शुद्ध किया जाता और उस पानी का सिंचाई या अन्य कार्यों में उपयोग किया जाता। विशेषज्ञों ने यह भी सलाह दी थी कि यमुना तटों पर हाईवे बना दिया जाए जिससे यह मेरिन ड्राइव की तरह दिखे। इसके अलावा यह भी योजना थी कि प्रतिवर्ष यमुना से बड़ी मात्रा में रेत खनन होना चाहिए, ताकि इसमें हर समय अधिक मात्रा में जल भरा रहे। इससे दिल्ली में जहां भूमिगत जलस्तर नीचे नहीं जाएगा, वहीं यमुना सुंदर भी दिखेगी। लेकिन 29 वर्ष बाद भी उस योजना पर अमल नहीं हो पाया है।

**यहां यातायात और पार्किंग की समस्या विकट रूप धारण कर रही है। इस समस्या से निपटने के लिए आपके पास क्या सुझाव हैं?**

मैं यह नहीं कहता कि राजधानी में विकास कार्य नहीं हुए हैं या नहीं हो रहे हैं, लेकिन इतना जरूर कहूंगा कि जो विकास कार्य अब हुए या हो रहे हैं, उन्हें दो दशक पहले ही हो जाने चाहिए थे। यहां की आबादी हर वर्ष करीब 40 से पचास हजार बढ़ जाती है। वाहन भी हर वर्ष एक लाख के करीब बढ़ जाते हैं। हमें आज जो भी विकास कार्य करने हैं, उन्हें आने वाले पच्चीस-तीस वर्ष बाद दिल्ली की क्या स्थिति होगी, उसे ध्यान में रखकर करने चाहिए। यदि हमने ऐसा नहीं किया तो आने वाले वर्षों में दिल्ली की स्थिति और ज्यादा खराब हो जाएगी। जहां तक पार्किंग की समस्या है तो उसे हम बहुस्तरीय (मल्टीलेवल) पार्किंग स्थल बनाकर दूर कर सकते हैं। जितने भी खेल के मैदान या पार्क हैं, उनके नीचे पार्किंग स्थल बना सकते हैं। रामलीला मैदान के नीचे मल्टीलेवल पार्किंग बन सकती है। वहां हजारों वाहनों को खड़ा किया जा सकता है।